सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास

b. भाषायी कौशलों का महत्व

c. भाषा के कौशल

d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग

f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल

g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल

b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर

c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर

d. वाचन शिक्षण की विधियाँ

e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें

f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल

b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता

c. लेखन कौशल का महत्व

d. लेखन शिक्षण का समय

e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा

f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ

g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

4. लेखन कौशल

भाषा के दो रूप होते हैं—लिखित और मौखिक। भावों को प्रकट करने के लिए ध्वन्यात्मक संकेतों का प्रयोग मौखिक कहलाता है तथा यही भाषा लिपिबद्ध कर दी जाय तो लिखित भाषा के रूप में बदल जाती है। ध्वनियों को शुद्ध रूप में बोलने के लिए उच्चारण की शिक्षा की जिस प्रकार आवश्यकता है उसी प्रकार हिन्दी में लिखित भावाभिव्यक्ति के लिए देवनागरी लिपि की शिक्षा परम आवश्यक है।

अर्थ—व्यक्ति अपने विचार दो प्रकार से व्यक्त करता है—

(i) बोलकर या (ii) लिखकर।

जब दूसरा व्यक्ति समीप ही हो तो व्यक्ति बोलकर अपनी बात या विचार प्रकट करता है, परन्तु जब दूसरा व्यक्ति दूर है तो या तो हम उस व्यक्ति के समीप चले जाएँ या उसे अपने समीप बुला लें और मौखिक रूप से अपने विचार प्रकट करें, किन्तु यह स्थिति सम्भव नहीं है। "जब विचार प्रकट करने वाला, जब चाहे अपने विचार प्रकट कर सके और जिस व्यक्ति के लिए उसने अपने विचार प्रकट किये हैं वह जब उसकी इच्छा हो और जहाँ चाहें उन विचारों को ज्ञात कर सके—ऐसी स्थिति में व्यक्ति जिस विधि का आश्रय लेता है उसे लिखना कहते हैं।"

दूसरे शब्दों में, "उच्चरित ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त करना लिखा है, उन प्रतीकों को अक्षर या वर्ण कहा जाता है। ये प्रतीक या ध्वनि चिन्ह लिपि के विकास की अन्तिम अवस्था है और यूँ कहें कि 'भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करना ही लिखना है'।"

अक्षरों व वर्णों को सुन्दर और सुडौल बनाना ही लिखना है। लिखकर हम अपने विचारों को दूर-दूर तक पहुँचा सकते हैं। "शुद्ध, सुनिश्चित एवं स्पष्ट शब्दावली के माध्यम से भावों एवं विचारों को क्रमायोजित लिपिबद्ध प्रकाशन को लिखित रचना कहते हैं।"

Scanned with CamScanner